ओम शान्ति 28-4-10 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश– गुल्जार दादी

आज बापदादा के पास आप सभी महान भाग्यवान बच्चों की यादप्यार और समाचार लेकर पहुँची तो क्या देखा कि बापदादा बहुत स्नेह-सम्पन्न दिव्य अमूल्य बाहों की माला से आओ बच्ची आओ कह मिलन मना रहे थे, मैं भी आगे बढ़ती उस न्यारी प्यारी अमूल्य बाहों में समा गई, लवलीन हो गई। कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आपके सर्व सिकीलधे बच्चों की यादप्यार लाई हूँ क्योंकि आपके आने का सीजन समाप्ति के बाद सबको बाप-बच्चों के सम्मुख मिलन का दृश्य और मधुबन की रौनक, मिलन-मेले का अलौकिक भाग्य याद आ रहा है। बापदादा बच्चों की याद का समाचार सुन बच्चों के स्नेह में ऐसे समा गये जैसे वतन में हमें न देख सभी बच्चों के सामने हैं। कुछ समय तो यह दृश्य ऐसे था जैसे बाप-बच्चों का दिल का मेला हो रहा है। कुछ समय बाद बाबा बोले, देखो बच्ची बाप का प्यारा संसार तो मेरे लाडले बच्चे ही हैं ना, तो बापदादा अपने बच्चों में ही समा गये, अभी समाचार सुनाओ।

मैं बोली बाबा अब तो सब बाप की आशाओं को प्रैक्टिकल करने की उमंग में हैं। जहाँ तहाँ भट्ठियों का प्रोग्राम बना रहे हैं व स्व उन्नति व विश्व सेवा में लगे हुए हैं। ऐसे सुनते ही बापदादा बच्चों के स्नेह में बोले वाह! बच्चे! - मेरे विश्व परिवर्तक बच्चे वाह! - ऐसे कहते बाबा हमें अपने साथ आगे ले चले तो क्या देखा कि दूर से बहुत दीपक जग रहे थे और सभी दीपक ताज के स्वरूप में चमक रहे थे। हरेक दीपक की जो लौ निकल रही थी उसके बीच सभी बच्चों का फेस दिखाई दे रहा था। सीन तो बहुत सुन्दर थी। बापदादा हर बच्चे को देख बोले हर बच्चा बाप के सिर का ताज हैं। देखो कितने सुन्दर चमक रहे हैं। बापदादा सदा बच्चों को अपने से भी ऊंचा उठाते हैं इसलिए ताज के रूप में दिखाया है। मैं भी यह अलौकिक दीपको को दीपमाला देख खुश हो रही थी, बापदादा भी खुश हो रहे थे कि बच्चे बाप की आशाओं को सम्पन्न करने की उमंग में हैं। अब तो बच्चे स्वयं भी देख रहे हैं कि अब यह दु:ख अशान्ति का समय भी अति में जा रहा है इसलिए हर बच्चे को अब दो बातों पर बहुत अटेन्शन रखना है - एक तो इस संगमयुग का सर्वोत्तम भाग्यवान **समय**, जिस थोड़े से समय में प्राप्तियाँ कितनी श्रेष्ठ मिली है इसलिए जो गायन है अब नहीं तो कब नहीं। दूसरा **शुभ संकल्प**, क्योंकि सारे प्राप्तियों का आधार श्रेष्ठ संकल्प ही है। श्रेष्ठ संकल्प द्वारा ही बाप से दिल का प्यार और सर्व परिवार से श्रेष्ठ भावना व श्रेष्ठ भाव ही है। इसलिए बापदादा अटेन्शन दिलाता है कि सारे दिन की रिजल्ट चेक करो कि संकल्प श्रेष्ठ रहा, समय सफल रहा क्योंकि इस द्वारा ही जमा की प्राप्ति होती है। अब साधारण प्राप्ति का समय नहीं है। अब तो हर सेकेण्ड, हर संकल्प श्रेष्ठ और सफल करने का समय है।

हे मेरे दिल तख्त के अधिकारी प्यारे बच्चे बापदादा के मन में समय प्रमाण यही आवश्यकता लगती है कि अभी भक्त आत्माओं की प्यास बुझाओ। बिचारी आत्मायें याद कर रही है आप पूज्य आत्मओं को - हमारे पूज्य, हमारे दयालु, कृपालु कहाँ हो - क्या हमारी पुकार सुनने नहीं आती? जरा सी खुशी, जरा सी शान्ति की अंचली तो दे दो। तो अब पुकारने वाले को अंचली देने का, मन्सा सेवा करने का समय आ गया है। इसलिए मन्सा सेवा को बढ़ाओ। सारे दिन में शक्तिशाली याद की परसेन्टेज को बढ़ाओ। ये ही बापदादा की बच्चों प्रति शुभ राय है। बोलो चेक करना और चेन्ज करना तो सहज रीति से कर सकते हो ना। बाप की आप कल्प-कल्प निमित्त बने हुए बच्चों प्रति ये ही राय है। बोलो बापदादा के साथी हो ना। अभी दिल में उमंग-उत्साह आ रहा है ना। इसके बाद बाबा ने सभी को पदम-पदम गुणा यादप्यार और दिल का दुलार देते हुए मुझे भी स्थूल वतन भेज दिया।

ओम् शान्ति।